ट्रेक्टर ड्राईवरिंग कौशल के माध्यम से आजीविका सृजन

केस स्टोरी

नाम - मोना परिहार पुत्री हीरालाल परिहार
शिक्षा - BA प्रथम वर्ष
गांव - रामनगर, पंचायत चेनपुरा
कृषि भूमि - 8 बीघा
ट्रेक्टर ट्रेनिंग अवधि - 12 दिन
आयोजक - विकासोन्मुख संस्थान, नरैना जयपुर (राजस्थान)
सहयोग - ब्रिजस्टोन इण्डिया प्राइवेट लिमीडेड

ट्रेनिंग से पहले

ट्रेक्टर ट्रेनिंग के पहले बाईक चलाने का सपना देखती थी गांव में रिस्तेदारो की बाईक आती थी तो उसको चलाने का प्रयास किया करती थी।

पंचायत से ट्रेक्टर ट्रेनिंग की जानकारी मिली तो सपना हकीकत में बदलने जैसा लगा।

ट्रेनिंग उत्साहित माहौल में, ट्रेनरों की देख रेख में पूरी हुई ट्रेक्टर चलना, पॉट्स की जानकारी, खेतो में जुताई का वास्तविक अनुभव आदि मिला।

ट्रेनिंग के बाद

हमारे परिवार में ट्रेक्टर था मगर हमारे लिए इसका उपयोग न के बराबर था हम ट्रेक्टर से डरते थे परिवार वाले भी कभी इस पर बैठने नहीं देते थे।

आज जब मेरी ट्रेनिंग पूरी हुई तो पिताजी बहुत खुश हुए उनका कहना था की अब हमारे खेत समय पर जुत जायेगे जिससे फसल की पैदावार में वर्द्धि होगी पिताजी को संतुष्टि है की मेरे घर पर नहीं होने पर भी खेतो का काम मेरी बेटी पूरा कर लेगी ।

आज में स्वयं अपने खेतो में ट्रेक्टर चलाकर ले जाती हूँ बुवाई, जुताई और ट्रॉली सम्बंधित ट्रांसपोर्टिंग जैसे चारा लाना, खेतो में खाद डालना आदि काम कर रही हूँ।

अभी खरीब की फसल में जुताई, बुवाई, खाद ढालने जैसे काम करके परिवार में 5000 से 8000 की बचत भी की है।

साथ ही मुझे RTO से चार पहिया वाहन का लाइसेंस भी मिला है जिससे मुझे ड्राइवरी करने के लिए मान्यता मिल चुकी है भविष्य में मेरे लिए महिला ड्राइवरी का काम करने की राह खुली गई है।